https://shikshabodh.in/

SHIKSHA BODH
(The Journal of Education and Humanities)
A quarterly, peer-reviewed/refereed journal
ISSN: 3139-5880 IMPACT FACTOR: 6.50
VOLUME-1| ISSUE-4 | October-December, 2026

रामकाव्य में सांकेतिक मनो भाषिकता
(श्रीरामचरितमानस के विशेष संदर्भ में)

दीपेन्द्र कुमार** * प्रो.गंगाधर वानोडे** ***** प्रो. टी. कमलाबती देवी**

* पीएच.डी. शोधार्थी, मणिपुर अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, विभाग, मणिपुर-795140 (इंफाल),

** सह-शोध निर्देशक एवं क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान,हैदराबाद केंद्र

*** शोध निर्देशिका एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी मणिपुर अंतरराष्ट्रीयविश्वविद्यालय, मणिपुर-795140, इंफाल

सारांश-

गोस्वामी तुलसीदास जी अपनी विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य रचना श्रीरामचरितमानस के लिए ख्याति प्राप्त हैं। रामकाव्य आधारित तमाम रचनाकारों की निर्मित हजारों रचनाओं और अनुवादों के बाद भी श्रीरामचिरतमानस की लोकप्रियता अविरलता से चलायमान है। विश्वभर में आज रामकाव्य के विदेशी भाषाओं में भी अनेक संस्करण उपलब्ध हैं, बावजूदइसके गोस्वामी जी की श्रीरामचरितमानस की मान्यता का अपना एक अलग ही महत्व स्थापित है। श्रीरामचरितमानस की लोकप्रियता में मात्र तुलसीदास जी की प्रयुक्त रचना मनोभाषिकता की प्रस्तुति से हीआज यहविश्व पटल पर स्थापित नहीं है, बल्कि इसकी मान्यता, स्वीकार्यता एवं लोकप्रियता के पीछे गोस्वामी तुलसीदास जी की मनोभाषिकता में मिश्रित सांकेतिक प्रयोगों के अतुल्य समाहार का भंडारण ही प्रमुख आधार है। इस आलेख में श्रीरामचरितमानस में तुलसी की मनोभाषिकता के सांकेतिक भाषा, प्रयोगों तथा सांकेतिक प्रयोजनों पर प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द-रामकाव्य, श्रीरामचरितमानस, सांकेतिकता, प्रयोग, लोकप्रियता, वैश्विक, भाषा, प्रयोजन, मुद्रा, भाव-भंगिमा, प्रतीक,भावाभिव्यक्ति, भाषेत्तर।

आलेख –विश्वभर में प्रचलित रामकथाओं में रचनाकारों के मनोभाषिक व सांकेतिक प्रयोगों की प्रस्तुति वैचारिक एवं रचना मनोभाषिकता में केंद्रित होती हैं। सभी रचनाकारों के अपनी-अपनी प्राथमिकताएं रचना में समाहित होती हैं। वही रचना प्रयुक्त प्राथमिकताएँ ही रचना को उसका स्तर निर्धारण अथवा लोकप्रिय होने का पैमाना निर्धारित करने का काम करती हैं। गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' केवल एक कथा ही नहीं है, बल्कि इसमें जीवन दर्शन को गहराई से समझाने के लिए प्रतीकों (Symbols) और संकेतों (Allegory) का अद्भुत प्रयोग किया गया है।

तुलसीदास जी के श्रीरामचरितमानस में मनोभाषिक अध्ययन दृष्टि से भाषेत्तर प्रतीक-प्रयोग का आधार एवं महाकाव्य में प्रयुक्त भावाभिव्यक्ति और मुद्राओं का प्रयोग, भाषाई व्यवहार और मुद्राओं का प्रयोग, विनम्रतासूचक व्यवहार और मुद्राओं का प्रयोग,

मुद्रा प्रयोगों के विविध रूप, आत्मीयताबोध की स्थिति में मुद्राओं का क्रम-निर्धारण करना, विनम्रतासूचक व्यवहार-प्रदर्शन में मुद्रा-प्रयोग-विवेचन करना, अविनम्र व्यवहार और मुद्रा-प्रयोग करना, मौन या निःशब्दता में व्यक्त अविनम्रता, सामान्य व्यवहार और मुद्रा-प्रयोग व मुद्रा-प्रयोग का मनोभाषिक संदर्भ आदि अवस्थाओं के प्रयोग प्रस्तुत किए हैं।

श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास जी ने श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, भरत, शत्रुघ्न, दशरथ, कैकयी, मंथरा, सुग्रीव, बालि, मारीच, रावण, विभीषण आदि पात्रों की भाव-भंगिमाओं के मनोभाषिक अध्ययन के साथ, पात्रों की भाव-भंगिमा में प्रयुक्त मनोभाषिकता का भी वर्णन प्रस्तुत किया है। महाकाव्य में भाव-भंगिमाओं का उचित प्रयोग, विनम्रतामूलक भाव-भंगिमाएँ, अविनम्र भाव-भंगिमाएँ, सामान्य व्यवहारसूचक भाव-भंगिमाएँ, भावाभिव्यक्ति में मुद्राओं और भाव-भंगिमाओं का मनोभाषिक महत्व आदि के अध्ययन हेतु पर्याप्त उदाहरण समाहित हैं। तुलसीदास जी द्वारा श्रीरामचरितमानस में पात्रों के भाषेतर प्रतीक-प्रयोग का मनोभाषाषिक अध्ययन, पात्रों के पुरोवाक्, अंगीय उपभाषा, अंग-संचालन की भाषा, अनुतान और कंठ-ध्वनि, अन्य के साथ विनम्रतामूलक अभिव्यक्ति और भाषेत्तर प्रतीक-प्रयोग में विनम्रता से अभिप्राय, विनम्रतामूलक भाषिक-संरचना और उसका सामाजिक आधार, भाषाई तत्व और विनम्रता, 'आप' सर्वनाम का प्रयोग, संबोधन-शब्दावली का प्रयोग, शब्द-प्रयोग, वचन-प्रयोग, ध्वनि-विकार, विशेषण-पदावली का प्रयोग, प्रिय/श्रद्धेय के आगमन पर सौभाग्य-वर्णन, सुझावात्मक भाषिक संरचना, विनम्रतामूलक भाषिक-संरचना में भाषेत्तर प्रतीकों का महत्व का वर्णन भी अध्ययन के योग्य है।

श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास जी द्वारा प्रयुक्त पात्रों के शिष्टाचार की भाषा और भाषेत्तर प्रतीक-प्रयोग के अंतर्गत शिष्टाचार और विनम्रता, शिष्टाचार का सामाजिक महत्व, शिष्टाचार-प्रदर्शन की भाषिक-संरचना, शिष्टाचार की अभिव्यक्ति में मुद्राओं का महत्व, शिष्टाचार की अभिव्यक्ति में भाव-भंगिमाओं का महत्व, शिष्टाचार और अंगीय उपभाषा, शिष्टाचार और अंग-संचालन, शिष्टाचार और कंठ-ध्वनि, शिष्टाचार की संप्रेषणीयता में भाषेत्तर प्रतीकों का महत्व तथा कृतज्ञता-प्रदर्शन और भाषेत्तर-प्रतीक के अंतर्गत पात्रों की आराध्य के प्रति कृतज्ञता और विनम्रता, कृतज्ञता की भाषा और भाषेत्तर प्रतीक, कृतज्ञता की अभिव्यक्ति और मुद्राएँ, कृतज्ञता-प्रदर्शन और भाव-भंगिमाएँ, कृतज्ञता-ज्ञापन और अन्य भाषेत्तर प्रतीक-प्रयोग वर्णन के योग्य हैं।

तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में अविनम्र एवं सामान्य भावाभिव्यक्ति और भाषेत्तर प्रतीक-प्रयोग के माध्यम से अविनम्रता से आशय, अविनम्र भावाभिव्यक्ति और भाषेतर प्रतीक-प्रयोग व सामान्य भावाभिव्यक्ति और भाषेतर प्रतीक-प्रयोग का उत्कृष्ट प्रयोग किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि महाकाव्य श्रीरामचरितमानस में पात्रों के मनोभाषिक प्रयोगों के साथ-साथ कवि भी मनोभाषिकता भी समाहित है। जिसका अध्ययन प्रस्तुत उक्त तथ्यों एवं प्रयोगों के माध्यम से किया जा सकता है। इसी प्रकार से पात्र दशरथ, राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण आदि के द्वारा प्रस्तुत भावाभिव्यक्ति, अलंकरणमय प्रस्तुति के साथ भाषाभिव्यक्ति और भाषेतर प्रतीक प्रयोग अध्ययन हेतु उपलब्ध है। जिसमें सम्भाषण-प्रक्रिया के दो प्रमुख तत्व भाषाई तत्व एवं भाषेत्तर तत्व उपयोगी हैं। पात्रों के भाषेतर तत्वों से अभिप्राय को प्रस्तुत करने के लिए कवि के श्रेष्ठ उदाहरण श्रीरामचरितमानस में प्रस्तुत हैं। जिसमें भाषेत्तर तत्वों के विविध रूप-व्यवहार में मुद्राओं, भाव-भंगिमाओं, अंगीय उपभाषा, अंग-संचालन की भाषा, अनुतान या कंठ-स्वर, अन्य भाषेतर तत्व और भाषाभिव्यक्ति प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत हैं। श्रीरामचरितमानस अध्ययन एवं अध्यापन की दृष्टि से एक आर्शीवादात्मक ग्रंथ है। इसमें मनोभाषिक अध्ययन के पर्याप्त उदाहरण तत्वों का समावेश है। आज के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से श्रीरामचरितमानस का आकलन करें, तो भी आज के दौर का मनोभाषिक अथवा मनोभाषा अध्ययन पक्ष का हर चिंतन श्रीरामचरितमानस के प्रत्येक काण्ड में दृष्टिगोचर होता है, जिन पर आगे के अध्यायों पर वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

श्रीरामचरितमानस में मनोभाषिक एवं भाषा विज्ञान के व्यवहारिक, भावनात्मक, बौद्धिक, चिंतनयुक्त, भाषाई अभिव्यक्ति, वातावरण, वेशभूषा, सौंदर्य आदि से संबधित अनेक चैपाई व दोहे दृष्टि में आते हैं। इस आदर्शवादी महाकाव्य में पात्रों के मन के विचार और भावाभिव्यक्ति के अनेक पक्षों को समाहित करते हुए तुलसीदास जी ने जो पात्रों की मनोवृत्ति एवं भाषाई अभिव्यक्ति का धार्मिक एवं सामाजिक समरसता के मध्य अंतरसंबध स्थापित किया। यह प्रयोग किसी दूसरे महाकाव्य में नहीं दिखाई पड़ता। इसमें, रचनाकार द्वारा मूक भाषा, स्पष्ट भाषा, अस्पष्ट भाषा में अपने मनोभावों को प्रस्तुत किया है।

गोस्वामी तुलसीदास द्वार रचितश्री**रामचरितमानस**में भाषा मुख्य रूप**अवधी**है। इसमें गहन आध्यात्मिक और दर्शनिक भावों को समझने के लिए प्रतीकों (प्रतीकों), रूपकों (रूपकों)औरसांकेतिक भाषा का बेहतर प्रयोग किया गया है। श्री**रामचरितमानस**ग्रंथ में मुख्यतः निम्नलिखित सांकेतिक भाषा और प्रतीक शामिल हैं-

श्रीरामचरितमानस में प्रयुक्त मुख्य प्रतीकात्मक प्रयोग:-

तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस महाकाव्य में अपने पात्रों को जिस रूप में प्रस्तुत किया है अथवा विभिन्न घटनाओं और पात्रों के माध्यम से किए गए मुख्य मनोभाषिकता आधारितप्रतीकात्मक प्रयोगों कोनिम्न आधार पर प्रस्तुत किया है-

1-तुलसी की मनोभाषिकता के सांकेतिक भाषा के प्रतीक-

श्री राम:ईश्वर, परब्रह्म, ज्ञान, और मर्यादा के प्रतीक हैं।

सीता जी:जीव-आत्मा या भक्ति का प्रतीक हैं, जो परमात्मा (राम) से मिलने के लिए लालायित रहती हैं।

लक्ष्मण जी:वैराग्य, पराक्रम और लक्ष्मण रेखा आत्म-अनुशासन का संकेत देती है।

रावण:अहंकार, वासना, और अज्ञान का प्रतीक है, जिसके दस सिर दस विकारों (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर, आदि) को दर्शाते हैं।

प्रतीकात्मक अर्थ में यात्रा और घटनाओं के संकेत:

समुद्र पार करना:सांसारिक मोह-माया (संसार सागर) को पार करने का प्रतीक है, जहाँ लंका तक पहुँचने के लिए 'राम सेतु' (नाम स्मरण और सद्गुरु का संग) का सहारा लेना पड़ता है।

लंका दहन:हनुमान जी द्वारा लंका का दहन असल में ज्ञान की अग्नि से अहंकार और अज्ञान रूपी लंका (विकारों) के नाश का प्रतीक है।

प्रतीकात्मक अर्थ में आध्यात्मिक अवस्थाएं:

सबरी के झूठे बेर:यह सांकेतिक रूप से दिखाती है कि ईश्वर को ऊंच-नीच या धन-दौलत नहीं, बल्कि प्रेम और शुद्ध भक्ति (निष्कपट भाव) प्रिय है।

हनुमान जी का समुद्र लांघना:जब वे लंका जा रहे थे, तब मैनाक पर्वत ने उन्हें विश्राम के लिए कहा, जो साधक के मार्ग में आने वाले सांसारिक प्रलोभन का प्रतीक है, जिसे हनुमान जी ने अस्वीकार कर दिया था।

श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने सांकेतिक भाषा अथवा प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग मुख्यतः आध्यात्मिक

भावों, दर्शनिक विचारों और गुप्त रहस्यों को सहज रूप से अभिव्यक्त करने के लिए किया गया है। तुलसी दास जी के इन प्रमुख सांकेतिक प्रयोगों को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

2-सांकेतिक मनोभाषिकतामें पात्रों और चरित्रों के प्रतीक व प्रयोग-

रामकाव्य में विभिन्न पात्र मानवीय वृत्तियों, आदर्शों और दर्शनों के प्रतीक बनकर आते हैं:

श्री राम:मर्यादा, आदर्श, शील, शक्ति और सौंदर्य के प्रतीक हैं। वे एक आदर्श राजा, पुत्र और पति के रूप में 'लोक-मंगल' के आदर्श का संकेत देते हैं।

सीता:साक्षात त्याग, पवित्रता और जगतजननी (माया या प्रकृति) का प्रतीक हैं।

लक्ष्मण और भरत:क्रमशः अतुलित शौर्य और भ्रातृ-प्रेम (त्याग और निष्ठा) के प्रतीक हैं।

3-सांकेतिक मनोभाषिकता में घटनाओं और संघर्षों के प्रतीकव प्रयोग -

राम-रावण युद्ध:इसे केवल दो व्यक्तियों का संग्राम न मानकर, सद्वृत्ति (धर्म) और दुर्बुद्धि (अधर्म), अथवा मानवीय मूल्यों और आसुरी प्रवृत्तियों के बीच का संघर्ष माना गया है।

सीता का हरण और अग्निपरीक्षा:सीता हरण सांसारिक मोह-माया के बंधन का प्रतीक है, और अग्निपरीक्षा सत्य व पवित्रता की अग्नि से गुजरने का संकेत है।

लंका दहन:हनुमान द्वारा लंका का दहन वासना, अहंकार और अज्ञान की लंका में ज्ञान (विवेक) की अग्नि प्रज्वलित करने का प्रतीक है।

स्वर्ण मृग: सीताहरण के लिए रचा गया षड़यंत्र एवं रावण द्वारा भेष बदलने के पश्चात सीता हरण, वह छल एवं विश्वासघात है, जिसके प्रति सावधानी का संकेत है।

4-सांकेतिक मनोभाषिकता में आधुनिक रामकाव्य (प्रतीकात्मकता का विस्तार)-

आधुनिक युग में रामकाव्य के प्रतीकों में नवीन अर्थ जुड़ गए-

राम की शक्तिपूजा (निराला):इसमें राम का चरित्र संघर्ष, शंका और आत्म-मंथन का प्रतीक है। शक्तिपूजा का प्रसंग मनुष्य द्वारा अपनी आंतरिक शक्ति (स्वाभिमान और पुरुषार्थ) को जगाने का सांकेतिक रूप है।

साकेत (मैथिलीशरण गुप्त):इसमें राम के माध्यम से 'आर्यों का आदर्श' और भारतीय संस्कृति की विजय को दर्शाया गया है। इसके साथ ही उर्मिला जैसे उपेक्षित पात्रों को त्याग और तपस्या का प्रतीक बनाया गया है। [

5- सांकेतिक मनोभाषिकता में प्रकृति और परिवेश के प्रतीक-

रामकाव्य में प्रकृति स्वतंत्र रूप से न आकर मानवीय भावनाओं और स्थितियों की प्रतिबिंब (प्रतीक) होती है।

राम के वन गमन के समय अयोध्या की उदासी, प्रकृति के शोक का प्रतीक है।

वर्षा ऋतु और शरद ऋतु का वर्णन क्रमशः सांसारिक क्रिया-कलापों और ज्ञान के प्रकाश के रूप में किया गया है।

रामकाव्य के सांकेतिक प्रयोग साहित्य को अधिक दार्शनिक और सार्वभौमिक बनाते हैं।

6-वानर और राक्षस सेना प्रतीक (मनुष्य के गुण और अवगुण):

भगवान राम की वानर सेना अच्छे कर्म और सात्विक विचारों का संकेत है, जब लंका की सेना तामसी (नकारात्मकता) और बुरे कर्मों का प्रतिनिधित्व करती है।तुलसीदास जी ने संकेत के माध्यम से मानव-जीवन की समस्याओं और उनके समाधान (धर्म और मर्यादा) को सहज रूप से दर्शाया है।

रावण- काम, क्रोध और लोभ का प्रतीक:रावण, कुंभकरण और मेघनाद जैसे राक्षस केवल पत्रक नहीं हैं, बल्कि वे इंसान विकारोन (अहंकार), निद्र (अज्ञान) और लोभ (लालच) के प्रतीक हैं।
हनुमान- भक्ति और समर्पण:हनुमान जी का चरित्र 'दास भक्ति' (सेवक भाव) और अटूट समर्पण का संकेत है। उनकी उड़ान और सक्षम मनुष्य की अलौकिक शक्ति और ईश्वर-प्रेम की अपरंपार क्षमता को दृष्टि है।
भरतजी- निष्काम प्रेम, त्याग और भाई के प्रति प्रेम का प्रतीक।
लक्ष्मणजी- विवेक, शक्ति और अधर्म के प्रति क्रोध के प्रतीक।
सीता जी-माया, शक्ति और शुद्ध चेतना का सांकेतिक रूप है।

तुलसी जी की श्रीरामचरितमानस में इसके अतिरिक्त अन्य पात्रों- दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी, मंथरा, बालि, सग्रीव, अंगद, नल-नील, मारीछ, सुसैन, सुपर्णखा, जटायु आदि अनेक पात्रों के विषय में अपनी मनोभाषिकता अभिव्यक्त की है। जिसमें उनकी विरक्त रचना मनोभाषिक एवं पात्रों सांकेतिक प्रयोगों से ही श्रीरामचरितमानस वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल हो सकी है।

निष्कर्ष- रामकाव्य साहित्य में रचनाकारों की अनेक रचनाओं में उनके द्वारा जहाँ अपनी मनोभाषिकता को प्रयुक्त कर रचनाओं को प्रस्तुत किया है। वहीं गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी लोकप्रिय रचना महाकाव्य श्रीरामचरितमान में मनोभाषिकता साथ सांकेतिकतामय भावाव्यक्ति को प्रधानता एवं प्रचुरता प्रदान की है। इसी भावपूर्ण भक्ति आधारित मनोभाषिक सांकेतिक प्रचुरता ने ही उनकी काव्य रचना श्रीरामचरितमानस को न केवल लोक मान्यता दिलवायी है, अपितु वैश्विक स्तर पर स्थापित करते हुए देवालयों में भी स्थान प्रदान कराया है।

संदर्भ-

1-'रामचरितमानस', टीकाकारः हनुमानप्रसाद पोद्दार, प्रकाशक एवं मुद्रक, गीताप्रेस, गोरखपुर पृ. 359
2- वही, पृ.स .407
3- वही, पृ.स .503

4- वही, पृ.स .810

5-वही, पृ.स .913

6-वही, पृ.स .930

7-'वाल्मीकीय रामायण', प्रकाशक, देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली पृ. 128

8-'रामायणमादिकाव्यम्, श्रीस्कन्दपुराणे उत्तरखण्डे रामायणमाहात्म्ये-श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण भाग-1, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण-1996 ई०, पृ.161

9-वही, पृ.- 95

9-'अय्यर, वीवीएस (1950), कंबा रामायणम-चार हजार से अधिक मूल कविताओं के पद्य या काव्य गद्य में अनुवाद के साथ एक अध्ययन, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्लीः दिल्ली तमिल संगम, 18 जून 2019 को लिया गया।

10-रामधारीसिंहदिनकर, 'संस्कृतिकेचारअध्ययाय) 'प्रकरण -16सरमो .इकबाल(, प्रकाशकउदयांचल, आर्यकुमाररोड, पटना4-, प्रथमसंस्करण-प्रकाशनवर्ष1946-, पृ.स3 .45

11-वही, पृ.स3 .58

12-वही, पृ.स .458

13-'सिकंदर का पाठ और अन्य कहानियाँ, सुरा पुस्तकें। (2006)। पृ.44, आईएसबीएन 978-81-7478-807-8

14-'असाधारण कवि कंबन पर ध्यान दें'', द हिंदू, 23 मई 2010। 8 फरवरी 2018 को लिया गया।

15-इंटरनेट साभार